

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

# د مسلمانانو د وروسته پاتي والي يوازينی علاج

مؤلف

شيخ الحديث مولانا محمد زكريا نور الله مرقده

ژباړونکی :

مولوي عبدالهادي (حماد)

Ketabton.com

(و نضایل اعمال و کتاب وروستی برخه)

## د حقيقت څرنگدیا

نحمده و نصلي علي رسوله الكريم.

د څه وخت راپه دې خوا زما د استاذ، مشر، زبدة الفضلاء او مقتدا عالم حضرت مولانا محمد الياس رحمته الله عليه په برکت د تبليغ کار شروع دئ، چي د امت د عالمانو، بزرگانو برکت او پوره پاملرنه ورسره وه پوهان خلگ ښه په خبر دي ما گنهگار بنده ته د دې پاكو هستيو امر و سو، چي د تبليغ په اړه يو څه وليکم ترڅو په تبليغ كولو كي اساني رامنځته سي او گټور تمام سي.

د دغه مخورو استادانو د امر په منلو يو څو كرښي ليكم، چي د دې لويو علماوو د علومو د درياب څخه يو څاڅكى دئ او د محمدي دين د باغچې څخه يو څو غونچې دي، چي په ډېره چابكۍ سره يو ځاى سوي دي كه چيري څه غلطۍ يا كمى پكښې ښكاره سي نو زما د قلم غلطې او د بې علمۍ نتېجه ده. د مهربانۍ له مخي يې اصلاح كړئ د احسان سبب به سي. الله جل جلاله دي پخپل فضل او كرم سره زما پر گناهونو پرده واچوي. ما او تاسو ته دي الله جل جلاله د دې پاكو هستيو د ښكو عملونو كړنلاره را نصيب كړي. الله جل جلاله دي موږ د خپلي رضا، د خپل دين د خپرولو او د خپل رښتيني رسول صلى الله عليه وسلم د اطاعت په دولت و نازوي. آمين

د بزرگانو د پښو خاوري

محمد احتشام الحسن، مدرسته كاشف العلوم

بستي حضرت نظام الدين اولياء دهلي - ۱۸ / ربيع الثاني / ۱۳۵۸ هـ ق

## د پيل خبري

بسم الله الرحمن الرحيم

الحمد لله رب العالمين والصلوة والسلام علي سيد الاولين والاخرين خاتم الانبياء والمرسلين محمد وآله واصحابه الطيبين الطاهرين .

د نن څخه د يارلس سوه كاله وړاندي كله چي دنيا د كفر، جهالت، ناپوهۍ او گمراهۍ په تيارو كي ډوبه وه د مكې مكرمې پر كاڼو او غرونو باندي د رشد او لارښووني سپوږمۍ رابښكاره سوه. تر مشرقه، مغربه، جنوبه، شماله او د دنيا تر هر كونجه پوري يې خپله رڼا ورسوله تر درويشتو كالو په كمه موده كي يې انسان و هغه لوړي مرتبې ته ورساوه چي په تاريخ كي يې د مثال وركولو څخه انسان عاجزه دئ او د رشد، صلاح، هدايت او كاميابۍ.

هغه مثال يې و مسلمانانو ته په لاس ورکړ، چي په رڼا کي يې تل د ترقۍ او ودي لاري پيدا کړي او ترسوونو کالو پوري يې پر دنيا باندي داسي حکومت وکړ، چي په دنيا کي هر چا د غري ورسره وهلي دي ذره ذره سوي دي.

دا يو حقيقت دئ انکار نه سي ځني کېدلای خو دومره بايد ووايم چي دغه پخوانۍ قصې نه څه گټه لري او نه څه تسلي په راتلای سي خو د اوسنۍ زمانې حالات او کوم څه چي تېرېږي دا موږ خپله د تېرو مشرانو او بزرگانو پر ژوند باندي يو بد داغ لگولی دئ. د مسلمانانو ژوند چي په تېرو ديارلسو سوو کالو کي په تاريخ کي وکتل سي نو داسي معلومېږي چي موږ د عزت، د بدبې، شان او شوکت مالکان او اجاره داران يو او که د هغه تاريخ څخه نظر واپول سي نو موجوده حالات بښي، چي موږ په ډير ذلت، خواری، افلاس او کمزوری کي نغښتي يو. نه زور او دولت سته، نه زر او دولت سته، نه شان او شوکت سته، نه پخپلو منځو کي مينه او محبت سته، نه ښه اخلاق او نه ښه عادتونه، هره بدي په موږ کي موجوده ده او هره ښکي زموږ څخه په ميلونو ليري ده. دښمنان زموږ په دې بد حال خوشحاله دي او هر ځای زموږ کمزوری بيانوي پر موږ باندي خاندي، پر موږ ټو کي کوي په دې بسنه نه کوي بلکي زموږ د زړه ټوټي پر نوي ماډرن کلتور مين ځوانان په اسلام او اصولو پسښند وهي. پر هره خبره يې اعتراض کوي او دا پاک دين لغوه او بېکاره بولي. عقل حيران دئ چي کوم قوم چي د دنيا تنده مړه کړې وه نن ولي هغه تېري دئ؟ کوم قوم چي دنيا ته تمدن، تهذيب او ښکلا وربخښلې وه نن ولي هغه غير مهذب او د تمدن څخه ليري دئ؟ د قوم رهنمايانو او مشرانو ډېر پخوا لا زموږ د دې بد حالت پېش بيني کړي وه او په مختلفو طريقو يې زموږ د اصلاح کوښښ کړی و.

### مرض بې ښايي جون جون دواکي

ژباړه: ناروغي زياتېږي هر څومره چي دوا خوري. نن تر بد لا بد حالت دئ او راتلونکي به د تېر په پرتله زيات د خطرونو ډک وي نو زموږ پټه خوله کښېنستل دومره لوی جرم دئ، چي بدله يې بيا په هيڅ شی نه سي پوره کېدلای. خو مخکي تر دې چي موږ عملي قدم پورته کړو په کار ده چي لومړی موږ پر هغه شيانو ورغېږو چي له وجي يې موږ د داسي خواری او ذلت سره مخ سوي يو او په دې عذاب کي ښکيل يو. زموږ د دې وروسته پاته والي زيات لاملونه سته، چي د مخ نيولو لپاره يې يو شمېر تدابير نيول سوي دي هر تدبير چي په کار اچول سوی دئ ناکامه او ناموافقۀ سوی دئ په همدې وجه زموږ مشران او رهبران په اميد او وېره کي پراته ښکاري. اصلي خبره دا ده چي تر اوسه پوري زموږ مرض معلوم سوی نه دئ، کوم څه چي بيان سوي دي هغه زموږ مرض نه دئ بلکي زموږ د مرض نښانې دي تر کومه

وخته پوري چي اصل مرض ته توجه ونه سي او پيدا نه سي نو د نښانو اصلاح شونې نه ده او تر کومه وخته پوري چي موږ د اصلي مرض اصلاح ونه کړو او معلوم يې نه کړو نو موږ ته د اصلاح لپاره خوله خلاصول سخته غلطې ده. زموږ دغه دعوه چي شريعت يو مکمل الهي قانون دی، چي زموږ د دنيا او آخرت د کاميابۍ ضامن دی. بيا نو هيڅ اړتيا نسته چي موږ د خپل مرض معلومول پيل کړو او علاج يې شروع کړو بلکي موږ ته په کار ده چي په قرآن کي خپل اصلي مرض پيدا کړو او هم د دې مرکز څخه د رشد او هدايت علاج پيدا کړو او څنگه چي قرآن کریم زموږ لپاره تر قيامته پوري قانون دی نو بيا موږ ته هيڅ دليل نسته چي موږ په دې قرآن عمل نيمگړی کړو. د مخکو او اسمانو لوی پاچا پخپله وعده کړې ده، چي د مخکي پاچهي او خلافت د مومنانو دی:

|                                                                                                                                                                                                 |                                                                                                                              |
|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| <p>ژباړه: الله ﷻ وعده کړې ده، چي په تاسو کي کوم څوک چي مؤمنان دي او نېک عملونه کوي زه به د مخکي خلافت ورکوم چي مومنان تل پر کافرانو باندي غالب وي او د کافرانو به هيڅوک مرسته کوونکي نه وي.</p> | <p>وَعَدَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا مِنْكُمْ وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِي الْأَرْضِ <sup>(۱)</sup></p> |
|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|

او دا يې هم تسلي ورکړې ده چي تل به مسلمانان پر کافرانو باندي برلاسي وي او د کافرانو به هيڅوک مرسته کوونکي نه وي:

|                                                                                                                             |                                                                                                                               |
|-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| <p>ژباړه: که چيري دغه کافران ستاسو سره جنگېدلي وای نو خامخا به پر شا تللي وای بيا د دوی هيڅ دوست او مرسته کوونکی نه وي.</p> | <p>وَلَوْ قَتَلْتُمْ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوَلَّوْا الْأَدْبَرَ ثُمَّ لَا يَجِدُوتَ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا <sup>(۲)</sup></p> |
|-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|

د مومنانو تل الله ﷻ مرسته کوي او دوی به تل سر لوري وي.

|                                                   |                                                                      |
|---------------------------------------------------|----------------------------------------------------------------------|
| <p>ژباړه: د مومنانو مرسته پر موږ باندي حق دی.</p> | <p>وَكَانَ حَقًّا عَلَيْنَا نَصْرُ الْمُؤْمِنِينَ <sup>(۳)</sup></p> |
|---------------------------------------------------|----------------------------------------------------------------------|

|                                                                                              |                                                                                                          |
|----------------------------------------------------------------------------------------------|----------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| <p>ژباړه: تاسو همت د لاسه مه ورکوئ تاسو غم مه کوئ تاسو به غالب ياست که پوره مومنان واست.</p> | <p>وَلَا تَهِنُوا وَلَا تَحْزَنُوا وَأَنْتُمْ الْأَعْلَوْنَ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ <sup>(۴)</sup></p> |
|----------------------------------------------------------------------------------------------|----------------------------------------------------------------------------------------------------------|

(۱) سورة النور الاية (۵۵).

(۲) سورة الفتح الاية (۲۲).

(۳) سورة الروم الاية (۴۷).

(۴) سورة ال عمران الاية (۱۳۹).

|                                                                                            |                                                                                                                |
|--------------------------------------------------------------------------------------------|----------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| <p>ژباړه: الله ﷻ لره عزت او الله ﷻ رسول او مؤمنانو لره (عزت دئ) مگر منافقان نه پوهېږي.</p> | <p>وَلِلَّهِ الْعِزَّةُ وَلِرَسُولِهِ وَلِلْمُؤْمِنِينَ<br/>وَلَكِنَّ الْمُنَافِقِينَ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٥٥﴾</p> |
|--------------------------------------------------------------------------------------------|----------------------------------------------------------------------------------------------------------------|

د پورتنیو آیاتو څخه تر غور وروسته معلومېږي چې د مؤمنانو سر لوري، شان او شوکت، کامیابي او ترقي د دوی د ایمان د صفت سره تړلې ده. که چیري د ده اړیکي د الله ﷻ او د رسول الله ﷺ سره ټینګي وي.

(کوم چې د ایمان مقصود دئ) نو کامیابي به د ده په برخه وي او که خدای مه کړه د ده رابطه د الله ﷻ او د رسول الله ﷻ سره کمزوري سي نو خواري او ذلت به د ده په برخه وي لکه چې په سترگو لیدل کېږي.

|                                                                                                                                                                           |                                                                                                                                                                                 |
|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| <p>ژباړه: قسم په زمانه چې انسان په تاوان کي دئ، مګر نه هغه څوک چې ایمان یې راوړی وي، نېک عملونه یې کړي وي، توصیه په حق او صبر سره کوي (دغه کسان د تاوان څخه خلاص دي).</p> | <p>وَالْعَصْرِ ﴿١﴾<br/>إِنَّ الْإِنْسَانَ لِفِي خُسْرٍ ﴿٢﴾<br/>إِلَّا الَّذِينَ ءَامَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ<br/>وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ ﴿٣﴾</p> |
|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|

زموږ پخواني مشران په نهايي عزت کي وه او موږ په نهايي ذلت او خواري کي يو، د دې څخه معلومېږي چې هغوی د کامل ایمان څخه برخمن وه او موږ د دې صفت څخه بي برخي يو لکه څرنگه چې د الله ﷻ رښتیني پیغمبر خبر ورکړی دئ:

|                                                                                                            |                                                                                                                                       |
|------------------------------------------------------------------------------------------------------------|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| <p>ژباړه: ژر دئ چې داسي وخت به راسي چې د اسلام به يوازي نوم پاته وي او د قرآن به يوازي نقشونه پاته وي.</p> | <p>سَيَأْتِي عَلَى النَّاسِ زَمَانٌ لَا يَقِي<br/>مِنَ الْإِسْلَامِ إِلَّا اسْمَهُ وَلَا مِنَ الْقُرْآنِ<br/>إِلَّا رِسْمَهُ (٥).</p> |
|------------------------------------------------------------------------------------------------------------|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|

اوس خبره داده که چیري په واقعي ډول موږ د حقيقي اسلام څخه بې برخي يو کوم چې د الله ﷻ او د ده د رسول ﷺ مقصود دئ او په دې دين پوري زموږ د دنيا او آخرت کامیابي تړلې هم ده نو بله کومه ذریعه ده چې په مټ یې موږ بیرته د دې نعمت څخه برخمن سو؟ او هغه کوم اسباب دي چې په وجه یې زموږ څخه د اسلام روح وتلی دئ او يوازي خالي بدن راپاته دئ. کله چې قرآن تلاوت سي او د محمدي امت د فضيلت وجه ولټول سي نو معلومېږي چې دې امت ته يو لوی او اعلی کار سپارل سوی دئ، چې د هغه په وجه د خير الامم (يعني غوره د امتو) خطاب ورته سوی دئ، د دنيا د پیدا کېدو څخه لوی مقصد د الله ﷻ وحده لا شریک له ذات او صفاتو پېژندنه ده او دا تر هغه وخته پوري ناممکنه ده

چي انسان د بديو او چټلتياوو څخه نه وي پاک سوی او په نېکو او سپېڅلو صفتونو بڼايسته سوی نه وي د دغي خبري لپاره په زرونو انبياء او رسولان راغلي دي او په آخر کي سيد المرسلين حضرت محمد ﷺ راوړلېل سو او بيا د اليوم اکملت لکم دينکم و اتممت عليکم نعمتي زيري ورکړل سو. اوس نو څرنگه چي دين پوره سو مکمل مقصد لاسته راغلی او پوره دين د عمل لپاره ورکړل سو نو په همدې وجه د نبوت سلسله ختمه سوه، کوم کار چي به انبياوو او رسولانو کاوه په پوره ډول محمد ي امت ته وسپارل سو.

ژباړه: اې محمدي امته! تاسو غوره د  
امتونو ياست د خلکو د گټي لپاره لېږل سوي  
ياست تاسو په نېکۍ سره امر کوئ او له بدو  
څخه خلک منع کوئ او په الله ﷻ باندي ايمان  
لرئ.

کُنْتُمْ خَيْرَ أُمَّةٍ أُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَأْمُرُونَ  
بِالْمَعْرُوفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ  
وَتُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ<sup>(٦)</sup>

ژباړه: په تاسو کي يوه داسي ډله پکاره ده، چي  
خلک د خيرو لوري ته راوبولي او د بدو څخه يې  
منع کوي او يوازي دغه خلک کامياب دي. په  
لومړي آيات کي د خير الامم وجه دا وښودل  
سوه، چي تاسو په نېکۍ سره امر کوي او د بدو  
څخه منع کوئ

وَلْتَكُنْ مِنْكُمْ أُمَّةٌ يَدْعُونَ إِلَى الْخَيْرِ  
وَيَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ  
وَأُولَئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ

په دوهم آيات کي په خصوصي ډول وښودل سوه، چي يوازي هغه کسان کامياب دي  
چي دغه کار کوي پر دې باندي بس نه ده بلکي بل ځای په ښکاره دغه کار نه کول د لعنت او  
ملامتيا سبب ښودل سوي دي.

ژباړه: په بني اسرائيلو کي چي کوم  
خلک کافران وو پر هغوی باندي لعنت کړل  
سوی دی پر ژبه د عيسى ﷺ او داود ﷺ  
دا لعنت په دې وجه وسو، چي دوی د هغوی  
د حکم څخه مخالفت وکړ او د حده ووتل کوم  
بد کار چي به دوی کاوه د هغه څخه يې نه منع  
کول بېشکه د دوی دغه کار بد و.

لُعِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ بَنِي إِسْرَءِيلَ  
عَلَى لِسَانِ دَاوُدَ وَعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ ذَلِكَ بِمَا  
عَصَوْا وَكَانُوا يَعْتَدُونَ ﴿٦٨﴾ كَانُوا لَا  
يَتَنَاهَوْنَ عَنْ مُكْرَمِ فَعْلُوهُ لَيْسَ مَا  
كَانُوا يَفْعَلُونَ ﴿٦٩﴾

د دغه وروستي آيات وضاحت په لاندي حديثونو کي کېږي.

(٦) سورة ال عمران الاية (١١٠).

١ : وفي السنن والمسنند من حديث عبد الله بن مسعود رضي الله عنه قال قال رسول الله ﷺ ان من كان قبلكم كان اذ عمل العامل فيهم بالخطيئة جائه الناهي تعزيرا فقال يا هذا اتق الله فاذا كان من الغد جالسك واكله وشاربه كانه لم يره على خطيئة بالامس فلما راي عز وجل ذالك منهم ضرب قلوب بعضهم على بعض ثم لعنهم على لسان نبهم داؤد و عيسى بن مريم ذالك بما عصوا وكانو يعتدون والذي نفس محمد بيده لتأمرن بالمعروف ولتنهون عن المنكر ولتأخذن على يدالسفيه ولتأطرن على الحق اطرا اوليضر بن الله قلوب بعضكم على بعض ثم يلعنكم كما لعنهم.

ژباړه: د عبد الله بن مسعود رضي الله عنه څخه روايت دئ چې رسول الله ﷺ وفرمايل: ستاسو څخه مخکي امتونه داسي وه چې چا به گناه وکړه نو منع کوونکي به هغه وپراوه او ورته ويل به يې چې د الله ﷻ څخه ووپرېږه دا کار مه کوه کله چې به سبا سو نو د هغه سره به يې ناسته ولاړه کول، خوراک او چښاک به يې ورسره کاوه په دې ډول چې گویا ده بېخي هغه سړی پر گناه باندي نه دئ ليدلی. کله چې الله ﷻ د دوی دا کارونه وليدل الله ﷻ د دوی زړونه يو د بل سره گډ کړل او د داود عليه السلام او عيسى عليه السلام په ژبه پر دوی باندي لعنت وويل سو دا په دې وجه چې دوی د الله ﷻ نافرمانی کوله او تر حد يې تېری کاوه. زما دي قسم په هغه ذات وي چې د محمد ﷺ روح يې په قدرت کي دئ په ښو کارونو امر کوئ او د بد کارو څخه منع کوئ او بې علمه ترلاس نيسئ په حقه خبره يې مجبور کړئ که نه نو الله ﷻ به ستاسو زړونه سره گډ کړي او لعنت به درباندي ووايي لکه پر تېرو امتونو چې لعنت وويل سو.

٢ : وفي سنن ابي داود و ابن ماجة عن جابر بن عبد الله قال سمعت رسول الله ﷺ يقول مامن رجل يكون في قوم يعمل فيهم بالمعاصي يقدرن على ان يغيروا عليه ولا يغيرون الا اصابهم الله بعقاب قبل ان يموتوا.

ژباړه: د جابر رضي الله عنه څخه روايت دئ، چې رسول الله ﷺ و فرمايل: په يو قوم کي چې يو سړی گناوي کوي او هغه قوم يې د توان سره منع نه کړي نو تر مرگ مخکي به پر دوی باندي عذاب راسي. يعنې په دنيا کي به په ډول - ډول عذابونو اخته سي.

٣ - و روي الاصبهاني عن انس رضي الله عنه ان رسول الله ﷺ قال لا تزال لا اله الا الله تنفع من قالها وترد عنهم العذاب والنقمة ما لم يستخفوا بحقها قالوا يا رسول الله

ترجمه: حضرت انس رضي الله عنه د رسول الله ﷺ څخه روايت کړی دئ، چې رسول الله ﷺ وفرمايل: کلمه طيبه ويونکي ته گټه رسوي او د عذاب او بلا څخه يې ساتي تر څو چې د حقونو يې بې پروايي نه وي کړې.

وما الاستخفاف بحقها قال يظهر  
العمل بمعاصي الله فلا ينكر ولا  
يغيروا<sup>(٧)</sup>.

اصحابو کرامو پوښتنه وکړه چې د کلمې طيبي د حقونو  
بي پروايي څه شي ده؟ رسول الله ﷺ وفرمايل: چې د  
الله ﷻ نافرمانی په ښکاره ډول کېږي بيا د دغه کار څخه  
انکار نه کېږي او نه يې د منع کولو لپاره کوښښ کېږي.

٤ : عن عائشة رضي الله عنها  
قالت دخل على النبي ﷺ  
فعرفت في وجهه ان قد حضره  
شيئ فتوضأ وما كلم احدا  
فلصقت بالحجرة استمع ما  
يقول فقعد على المنبر  
فحمد الله واثنى عليه وقال يا  
ايها الناس ان الله تعالى يقول  
لكم مروا بالمعروف وانها عن  
المنكر قبل ان تدعوا فلا  
اجيب لكم وتسلوني  
فلا اعطيكم وتستصروني فلا  
انصركم فمأزاد عليهن حتى  
نزل.

ژباړه: حضرت عائشة رضي الله عنها فرمايي، چې: رسول الله  
ﷺ زما کړه تشریف راوړی مایې په مخ کې یو خاص اثر  
ولیدی پوه سوم چې یوه خبره خامخاسته د هیچا سره یې  
خبرې نه وکړې اودس یې تازه کړ، مسجد ته ولاړی زه د  
مسجد دیوال ته نژدې ودرېدم چې رسول الله ﷺ څه  
فرمایي هغه واوړم. رسول الله ﷺ و منبر ته وختی د الله  
ﷻ حمد او ثنا یې وویل بیا یې وفرمایل: ای خلکو! الله  
ﷻ تاسو ته امر کوي چې په ښکیو سره امر وکړئ او د بدو  
څخه خلگ منع کړئ داسي نه چې داسي وخت راسي تاسو  
به دعا غواړئ زه به یې قبلوم، تاسو به زما څخه غوښتنه  
کوئ زه به یې نه درکوم زما څخه به کومک غواړئ زه به  
ستاسو مرسته نه کوم. نبي ﷺ دغه الفاظ وویل او د منبر  
څخه راکښته سو.

٥ : عن ابي هريرة رضي الله عنه  
قال قال رسول الله ﷺ اذا  
عظمت امتي الدنيا نزلت  
منها هيبه الاسلام واذا تركت الامر  
بالمعروف والنهي عن المنكر  
حرمت بركة الوحي واذا تسابت  
امتي سقطت من عين الله <sup>(٨)</sup>.

ژباړه: ابو هريرة رضي الله عنه د رسول الله ﷺ څخه روايت  
کوي چې رسول الله ﷺ وفرمايل: کله چې زما امت ته  
دنیا د عزت او درنښت وړ سوه نو د دوی د زړونو څخه به د  
اسلام عزت او هيبت ووزي او که یې امر بالمعروف او نهی  
عن المنکر پرېښودی د وحيو د برکت څخه به محرومه سي  
او که یې پخپلو منځو کې یو دبله ښکښل کول پیل کړه  
دالله ﷻ د (رحمت) د نظر څخه به وغورځول سي.

<sup>(٧)</sup> ترغيب.

<sup>(٨)</sup> كذا في الدر عن الحكيم الترمذي.

په پورتنیو حدیثونو کې د فکر کولو څخه وروسته معلومېږي چې امر بالمعروف او نهی عن المنکر پرېښودل د الله ﷻ د لعنت او غضب سبب جوړېږي.

کله چې محمدي امت دا کار پرېږدي نو د سختو تکلیفونو، غمونو او خواریو سره به مخ سي او د هر ډول غیبي مرستې څخه به یې برخې سي دا ټول هغه وخت رامنځته کېږي چې محمدي امت خپله فریضه پرېږدي او د خپلې ذمه واری څخه غافله سي. همدا وجه ده چې نبی ﷺ امر بالمعروف او نهی عن المنکر د ایمان خاصیت او لازمي برخه یې گرځولې ده او پرېښودل یې د ایمان کمزوري او ضعف ښودلی دی. د ابو سعید خدری رضی الله عنه روایت دی:

|                                                                                                                                                                                                     |                                                                                                                           |
|-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| <p>ژباړه: که په تاسو کې څوک بدي وويني نو په لاس دي یې منع کړي که یې په توان نه وه نو په خوله دي یې منع کړي او که یې دا هم په توان نه وه په زړه دي یې منع کړي (يعني په زړه کې دي نفرت ځني وکړي).</p> | <p>من رأي منكم منكرا فليغيره<br/>بيده فان لم يستطع فليسانه فان لم<br/>يستطع فقلبه وذلك اضعف<br/>الايما<sup>(٩)</sup>.</p> |
|-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|

دا د ایمان کمزورې درجه ده. نو څرنگه چې په زړه کې بد ځني وړل د ایمان کمزورې درجه ده نو اوله یې تر ټولو کامله او لوړه درجه ده. خو تر دې روښانه د ابن مسعود رضی الله عنه روایت دی:

|                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                              |                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                    |
|----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| <p>ژباړه: هر ښې چې مخکې تېر سوی دی خامخا به یې یوه ډله د تربیه سوو ملگرو څخه درلوده چې دوی به د نبی سنت برپایه کول او پوره تابعداري به یې کول الهي دین چې په کومه بڼه او ډول پیغمبر پرې ایښي و په هغه ډول به یې محفوظ ساتی، یوه ذره تغیر به یې نه پکښې راوستی خو تر دې وروسته چې د شر او فساد وخت راسي داسي خلگ به پیدا سي چې هغه څه به وایي چې خپله عمل نه په کوي. کارونه به یې داسي وي چې شریعت اجازه نه وي ورکړې نو د داسي خلگو پر خلاف د سنت او حق قائمولو په موخه د لاس څخه کار واخلي مومن دئ او که چا د لاس څخه کار وانه خستی د ژبي څخه کار واخلي مومن دئ او که یې دا هم نه وکړه بلکې نیت او عقیده یې د داسي خلگو پر خلاف راوستل مومن دئ، مگر دا د ایمان آخره درجه ده د ایمان حد پر دغه ځای خلاصېږي که چا دا هم نه وکړل نو په زړه کې یې د خرماختګي د منع د پردې په خیر ایمان نسته.</p> | <p>ما من نبی بعثه الله<br/>قبلي الا كان له في امته<br/>حواريون واصحاب<br/>يأخذون بسنته ويقتدون<br/>بامره ثم انها تخلف من<br/>بعدهم خلوف يقولون مالا<br/>يفعلون ويفعلون<br/>مالا يامرون فمن جاهدكم<br/>بيده فهو مؤمن ومن<br/>جاهدكم بلسانه فهو<br/>مؤمن ومن جاهدكم بقلبه<br/>فهو مؤمن وليس وراء<br/>ذلك من الايمان حبة<br/>خردل<sup>(١٠)</sup>.</p> |
|----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|

(٩) مسلم.

(١٠) مسلم.

د پورتنۍ کار د اهمیت په موخه امام غزالي رحمۃ الله علیه داسې فرمایي: په دې کې هېڅ شک نسته چې امر بالمعروف او نهی عن المنکر د ایمان داسې مضبوط رکن دی چې د دین ټوله شیان ورسره تړلي دي د دغه کار د کولو لپاره الله ﷻ ټوله انبیاء عليهم السلام رالېږلي دي او که یې علم او عمل پرېښودل سي نو العیاذ بالله د نبوت بې کاره کیدل به لازم سي. دینداري چې انساني شرافت دی کمزوري به سي. سستی به عامه سي د گمراهۍ او ضلالت لاري به خلاصي سي، جهالت به په ټوله دنیا کې خپور سي، په ټولو کارونو کې به خرابوالی راسي. په خپلو منځو کې به بې اتفاقي او بدنيتي خپره سي، آبادۍ به وراني سي، مخلوق به تباہ او برباد سي، د دې بربادۍ او تباہۍ درک به هغه وخت معلوم سي چې کله خلک د الله ﷻ په وړاندې ودرول سي او پوښتنه ځني وسي.

افسوس سل ځلي افسوس کومه خطرې چې وه هغه راغله کومو سترگو وېره ولیده؟

کان امر الله قدرا مقدورا فانا لله وانا اليه راجعون.

د دغه شنې ستني نښانې له منځه تللي دي د حقيقت او د سمونو برکتونه له منځه تللي دي. د خلکو پر زړونو د سپکوالي او ذلالت مهر ونه ولگیدل د الله ﷻ سره د زړه اړیکې له منځه ولاړې د نفسي خواهشاتو تابعداري د ځناورو په څېر روانه ده. د مخکې پر مخ داسې مؤمن پیدا کول گران دي، لږ والي یې څه کوې بيخي نسته چې د حق د ښکاره کولو په موخه دي د چا ملامتیا وزغمي، که یو غښتلی مؤمن لیځي راو نغاړي د تباہۍ د ليري کولو لپاره اراده وکړي، د سنت د ژوندي کولو لپاره میدان راسي نو یقینا دغه کس په ټول مخلوق کې یو امتیازي حیثیت لري او د ښکاره هستۍ مالک دی. امام غزالي رحمۃ الله علیه چې په کومو الفاظو د دغه کار اهمیت موږ ته بیان کړی دی زموږ د بیدارېدو لپاره بسنه کوي.

لومړۍ وجه دا ده چې موږ پورتنۍ فريضه يوازي په علماوو پوري خاص کړېده او حال دا چې په قرآن کریم کې د الله ﷻ امر و ټولو ته دی د محمدي امت هر وگړی پکښې شامل دی ځکه د دې د سپیناوي لپاره د اصحابو کرامو او خير القرون ژوند ښکاره شاهد دی.

د تبلیغ، امر بالمعروف او نهی عن المنکر په علماوو پوري خاص کول او د دوی په ډاډ سره بې غمه کېدل زموږ لویه ناپوهي ده. د عالمانو مسئولیت دا دی چې سیده او حقه لاره وښيي بیا نو عمل په کول او نور پر روانول دا د نورو کار دی، دغه خبره د رسول ﷺ په حدیث کې بیان سوېده:

ژباړه: بېشکه تاسو ټول ساتونکي یاست د هر چا څخه به د خپل رعیت پوښتنه کېږي نو پاچا د خلکو ساتونکی دی د خلکو پوښتنه به ځني کېږي. سړی د خپلي کورنۍ ساتونکی دی د خپل کور پوښتنه به ځني

الا کلکم راع وکلکم مسئول  
عن رعيته فالامير الذي على الناس  
راع عليهم وهومستول عنهم والرجل  
راع على اهل بيته وهو مسئول عنهم  
والمرأة راعية على بيت بعلمها وولده

|                                                                                                                                                                  |                                                                                                              |
|------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| <p>کېږي او ښځه د خپل خاوند د کور او اولادو ساتونکې ده په دغه باره کې به پوښتنه ځنې کېږي او تاسو ټوله ساتونکي ياست د هر چا څخه د خپل رعيت په اړه پوښتنه کېږي.</p> | <p>وهي مسئولة عنهم والعبد راع على مال سيده وهو مسئول عنه فكلّم راع وكلّمك مسئول عن رعيته<sup>(۱۱)</sup>.</p> |
|------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------|

|                                                                                                                                                                            |                                                                                            |
|----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------|
| <p>ژباړه: رسول ﷺ وفرمايل: دين سراسر نصيحت دئ (اصحاب ﷺ وايي) موږ ورته وويل د چا لپاره؟ رسول ﷺ وفرمايل: د الله ﷻ، رسول ﷺ، د مسلمانانو اميرانو او د ټولو مسلمانانو لپاره.</p> | <p>قال الدين النصيحة قلنا لمن؟ قال لله ولرسوله ولائمة المسلمين وعامتهم<sup>(۱۲)</sup>.</p> |
|----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------|

که فرض کړو چې دا کار يوازي د علماوو لپاره دئ نو اوس خو اړتيا ده وخت د دې غوښتنه کوي چې ټوله د دې کار لپاره ملا وتړي او وخت پکښې ولگوي. دوهمه وجه دا ده چې موږ داسي فکر کوو چې خپله به ايمانونه ټينگ کړو د نورو گمراهي موږ ته هيڅ تاوان نه رسوي لکه چې د دې آيات څخه معلومېږي.

|                                                                                                                      |                                                                                                                               |
|----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| <p>ژباړه: اې ايمان والوو! کله چې تاسو پرلار روان ياست نو د نورو گمراهي تاسو ته هيڅ تاوان نه رسوي<sup>(۱۴)</sup>.</p> | <p>يَتَأْتِيهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا عَلَيْكُمْ أَنفُسُكُمْ لَا يَضُرُّكُمْ مِّنْ ضَلَّ إِذَا اهْتَدَيْتُمْ<sup>(۱۳)</sup></p> |
|----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|

په حقيقت کې د پورتنی آيات څخه مطلب دا نه دئ لکه په ښکاره چې معلومېږي ځکه دغه معنی د الهي حکمت او ديني غوښتنې څخه بيخي خلاف ده ځکه اسلامي ملت ټول د يو بدن مثال لري که د بدن پر يوه غړي باندي درد سي نو ټوله بدن ورسره نارامه وي د دې څخه اصلي مطلب دا دئ چې دين چې هر څومره کمال ته ورسېږي بيا به هم ځيني خلک وي چې سيده او حق لاره به پرېږدي گمراهي به غوره کوي په پورتنی آيات کریمه کې الله ﷻ و مومنانو ته تسلی ورکوي چې که خپله پر صحيح لاره باندي ودرېږي نو د دوی د گمراهۍ څخه و تاسو ته د تاوان وېره نسته.

همدا ډول اصل شريعت دا دئ چې سړی د دين ټوله احکام ومني او عمل په وکړي نو د دين د احکامو څخه خو يو دا هم دئ چې سړی به امر بالمعروف او نهی عن المنکر کوي. د دغه وينا تائيد د ابو بکر ؓ په لاندې حديث سره کېږي:

(۱۱) بخاري و مسلم.

(۱۲) ۱۲ مسلم

(۱۳) سورة المائدة الاية (۱۰۵).

(۱۴) بيان القرآن.

ژباړه: ابوبکر رضي الله عنه وفرمايل: اي خلگو!  
تاسو دا آيات وړاندي کوي چي الله جل جلاله فرمايي:  
يَتَأْتِيهِمُ الَّذِينَ آمَنُوا... (الاية) حال دا چي ما  
د رسول الله صلي الله عليه وسلم څخه اورېدلي دي، چي څوک يو  
ناروا کار وويني او منع يې نه کړي نو نژدې دى  
چي الله جل جلاله به يې په عمومي عذاب کي گرفتار  
کي

عن ابي بکر الصديق رضي الله عنه قال  
ايها الناس انكم تقرأون هذه الآية يَتَأْتِيهِمُ  
الَّذِينَ آمَنُوا عَلَيْكُمْ أَنْفُسَكُمْ لَا  
يَضُرُّكُمْ مَنْ ضَلَّ إِذَا اهْتَدَيْتُمْ فإني  
سمعت رسول الله يقول ان الناس اذا راوا  
المنكر فلم يغيروه اوشك ان يعمهم الله  
بعقابه.

څېړونکو علماوو د پورتنی آيات همدا معنی مراد کړېده. امام نووي رحمه الله د مسلم  
شريف په شرحه کي ليکلي: د تحقيق کوونکو علماوو مذهب د پورتنی آيات کریمه په اړه  
داسي دى، چي کله تاسو يو ښک کار وکړئ، نو د نورو نه کول يا گمراهي تاسو ته کوم تاوان  
نه سي رسولای لکه چي الله جل جلاله فرمايي: ولا تزر وازرة وزر اخرى.

نو کله چي داسي ده نو د کومو شيانو چي امر ورکړل سوې دى هغه ټول امر بالمعروف  
او نهی عن المنکر دى نو چا چي دا امر برپايه کړی يعني په ښو کارونو يې امر وکړ او د بدو  
کارو څخه يې منع وکړه نو ده خپله ذمه واري او وجيبه پوره کړه نور نو پر ده ملامتيا او الزام د  
هغوى نه عمل کول او گناه کول ده ته تاوان نه رسوي (والله اعلم).

دریمه وجه دا ده چي ټول خلگ يعني عوام، خاص، عالم، جاهل او هر سپی ناامیده  
سوي دي چي نور نو د دين ترقي نه سي راتلاى دا يې يقين دى، چي دا کار گران دى د چا په  
مخ کي چي د اصلاح نظام وړاندي سي نو دى په جواب کي ورته وايي چي اوس خو نه  
حکومت او نه سلطنت سته، نه د مټو زوړ سته، نه مال او سامان سته، نه د جنگ وسايل سته،  
نه مرکزي حيثيت سته او نه اتفاق او اتحاد سته. دینداره خلگ خو وايي چي اوس څوارلسمه  
صدى ده د رسالت د رڼا کمه سوې ده اوس نو د اسلام زوال يو لازمي شى دى. دا خبره  
صحيح ده چي څومره د نبوت د رڼا څخه ليري والی راځي د حقيقي اسلام شغلې به کمېږي خو  
د دې هيڅکله دا مطلب نه دى، چي د دين د حفاظت او ساتني لپاره به کونښن او محنت نه  
کېږي، ځکه که چيري داسي وي او زموږ مشرانو هم داسي فکر کړی وي نو تر موږه پوري به  
د اسلام د رارسېدو هيڅ لاره نه وای البته زمانه چي ناموافق ده نو د ټولني کړو وړو ته دي  
وکتل سي څنگه چي ښايي په هغه ډول دي په زيات همت او استقلال سره کار اخيستل پيل  
سي. د حيرانتيا خبره دا ده چي د کوم دين بنسټ چي سراسر پر قرباني او عمل باندي ايښودل  
سوی و، نن د هغه دين منونکي سراسر د عمل څخه خالي دي حال دا چي په قرآن کریم کي  
ځای پر ځای د عمل سبق ښودل سوی دى او تاسو يې هم لولي. يو عبادت کوونکی چي ټوله

شپه عبادت کوي د ورځي روژه نيسي او ټول وخت د الله، الله ذکر کوي دغه سړی هېڅ د هغه چا سره نه سي برابرېدلای چي هغه د اصلاح او هدايت لپاره بې ارامه وي. قرآن کریم ځای پر ځای د جهاد في سبيل الله تاکيد فرمايلي دی او د مجاهد فضيلت يې بيان کړی دی:

ژباړه: هغه کسان چي بېله عذره کور ناست دي د عذر پرته (جهاد نه کوي) د هغه کسانو سره برابر نه دي چي په مال او ځان سره جهاد کوي. کوم کسان چي په مال او ځان سره جهاد کوي د هغه کسانو په پرتله يې فضيلت زيات دی، چي کور ناست دي. د ټولو سره الله ﷻ د نيکۍ وعده کړېده. الله ﷻ د مجاهدينو ته پر ناستو خلگو باندي فضيلت په لوی اجر سره ورکړی دی يعنې لويې درجې د الله ﷻ د لوري څخه مغفرت او رحمت ورکړل سوی دی الله ﷻ زيات بخښونکی او زيات مهربانه دی.

لَا يَسْتَوِي الْقَاعِدُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ غَيْرُ أُولِي الضَّرَرِ وَالْمُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ فَضَّلَ اللَّهُ الْمُجَاهِدِينَ بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ عَلَى الْقَاعِدِينَ دَرَجَةً وَكُلًّا وَعَدَ اللَّهُ الْحُسْنَىٰ وَفَضَّلَ اللَّهُ الْمُجَاهِدِينَ عَلَى الْقَاعِدِينَ أَجْرًا عَظِيمًا ۖ دَرَجَتٍ مِّنْهُ وَمَغْفِرَةً وَرَحْمَةً ۖ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا ﴿٩٦﴾

که څه هم د جهاد مقصد د کفارو او مشرکینو و مخ ته ټينګ درېدل دي او د اسلام لوړوالی دی خو له بده مرغه موږ د دې لوړ او خوندور نعمت څخه بې برخي سوي يو، نو تر خپله وسه خوراته په کار ده چي د اسلام لپاره په هر ډول چي کېږي کوبښن او زيار وباسو آخر به زموږ دا لږ لږ هڅي موږ مخ ته ورسوي.

والذين جاهدوا فينا لنهدينهم سبلنا!

ژباړه: کوم خلګ چي زموږ د دين په لاره کي کوبښن کوي موږ د هغوی لپاره خپلي لاري پرانيزو.

په دې کي هېڅ شک نسته چي الله ﷻ د خپل دين د ساتلو او حفاظت لپاره وعده کړېده خو زموږ لپاره د دې دين د ودې او ترقي لپاره هڅي لازمي دي، اصحابو کرامو چي د دين لپاره څومره کوبښونه وکړه عملي ګټي يې وليدي او د غيبي مرستو څخه برخمن سوه چي موږ يې نومونه تر اوسه پوري اخلو او مثال پرې وايو.

که چيري موږ د دوی پر لاره باندي ولاړ سو او د کلمې طيبې د لوړوالي او ترقي لپاره ملا وتړو نو يقيناً به زموږ د غيبو څخه مرسته وسي او سرلوړي به سو، ځکه الله ﷻ فرمايي:

(<sup>15</sup>) سورة النساء الايتان (٩٥، ٩٦)

يَتَأْتِيهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا إِن تَنْصُرُوا  
 اللَّهُ يَنْصُرْكُمْ وَيُثَبِّتْ أَقْدَامَكُمْ ﴿١٦﴾

ژباړه: که تاسو د الله ﷻ مرسته وکړئ الله ﷻ به ستاسو مرسته وکړي او ستاسو قومونه به ټينګ کړي (د شيطان او کافرانو په مقابل کې).

خلورمه وجه دا ده چې موږ فکر کوو چې موږ د دې لوړې مرتبې اهل نه يو چې دا کار وکړو. نو څرنگه چې موږ د دې کار اهل نه يو نو بيا په کومه خوله موږ دا کار شروع کړو داسي نه ده، ځکه چې موږ ته الله ﷻ امر کړی دی، موږ ته د پاته والي هيڅ لاره نسته موږ ته يوازي د الله ﷻ په امر سره کار شروع کول په کار دي دا به انشاء الله زموږ د استقامت او توانايۍ سبب سي په دغه ډول به تل اوسو، يوه ورځ به الله ﷻ سعادت رانصيب کړي او دا هيڅ کله نه سي کېدلای چې موږ دي د الله ﷻ په لاره کې کوښښ کوو او رحمان او رحيم ذات دي موږ ته نظر نه کوي ځکه په حديث کې راځي:

عن انس رضي الله عنه قال قلنا يا رسول الله! لا نأمر بالمعروف حتى نعمل به كله ولا ننهي عن المنكر حتى نجتنه كله فقال ﷺ: بل مروا بالمعروف وان لم تعملوا به كله وانها عن المنكر وان لم تجتنبوه كله (١٧).

ژباړه: د حضرت انس رضي الله عنه څخه روايت دی، چې موږ رسول الله ﷺ ته وويل: يا رسول الله! موږ په نېکو امر نه کوو ترڅو چې موږ خپله په ټولو عمل نه وي کړی او نه د بدو څخه منعه نه کوو ترڅو چې موږ د ټولو بدو څخه نه يو منعه سوي، رسول الله ﷺ وفرمايل: تاسو په نېکو امر کوئ که څه هم تاسو په ټولو عمل نه وي کړی د بدو څخه منعه کوئ که څه هم د ټولو څخه تاسو ځان نه وي ساتلی.

پنځمه وجه دا ده، چې موږ داسي فکر کوو چې ځای پر ځای مدرسي سته، عالمان نصيحتونه کوي، خانقاوي ابادي دي، کتابونه او رسالې چاپېږي دا ټول د امر بالمعروف او نهی عن المنکر څانګې دي په دغه کارو سره فرض غاړې خلاصېږي.

په دې کې هيڅ شک نسته چې دغه ټولي ادارې لازمي دي او توجه ورته کول د ضروري کارو څخه ده ځکه لږه او ډيره رڼا چې سته هغه هم د دغه ادارو برکت دی، خو بيا هم زموږ لپاره يوازي دغه ادارې کافي نه دي او که موږ بس والی په وکړو دا به زموږ ښکاره غلطی وي ځکه دغه ادارې هغه وخت بس وي چې زموږ د دين سره مينه وای او زموږ په زړو کې د دين شوق او درنښت وای. د نن څخه پنځوس کاله مخکې زموږ په زړو کې د دين شوق موجود و په هغه وخت کې زموږ لپاره دغه ادارې بس وې اوس پرديو قومونو د ډېرو کوښښونو په نتيجه کې زموږ څخه د دين جذبه وړې ده د دين سره د مينې پر ځای موږ د

(١٦) سورة محمد الاية (٧).

(١٧) رواه الطبراني في الصغير الاوسط.

مذهب څخه تښتو په داسي صورت کي موږ ته يو بل تحريک په کار دى، چي د هغه په نتيجه کي موږ د عوامو خلکو د دين سره مينه پيدا کړو او مړه جذبات يې بېرته راژوندي کړو که داسي وسي نو موږ د پورتنيو ادارو څخه پوره گټه اخستلاى سو او که داسي نه وي نو د دې پر ځاي چي موږ به گټه ځني وانه خلو د هغه ادارو پاتېدل هم گران دي.

شپږمه وجه دا ده چي کله موږ دا کار شروع کړو نورو ته ورځو هغوى زموږ سره په بده طريقه ويني، په سختۍ سره جواب راکوي، زموږ سپکاوى کوي او موږ بې عزته کوي نو موږ ته دا معلومول په کار دي، چي دا کار د انبياوو دى په داسي تکليفونو او زحمتونو کي بنکېدل د دغه کار خصوصيت دى انبياوو په دغه کار کي تر دې ډير تکليفونه زغملي دي ځکه الله ﷻ فرمايي:

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ فِي شَيْعِ الْأَوَّلِينَ ﴿١٧﴾ وَمَا يَأْتِيهِمْ مِنْ رَسُولٍ إِلَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ﴿١٨﴾

ژباړه: موږ په لومړنيو ډلو کي تر تا وړاندي رسولان لېږلي دي او موږ هېڅ رسول نه دى لېږلي مگر دوى به پسڅند په واهه.

رسول ﷺ فرمايي د دعوت په لاره کي چي پر ما باندې څومره تکليفونه او زحمتونه راغلي دي بل پر هېڅ پيغمبر نه دي راغلي. څرنگه چي زموږ سردار او آقا په دې لاره کي دومره غمونه او تکليفونه زغملي موږ هم د ده تابعداريو د ده کار راسپارل سوى دى موږ ته هم په کار ده چي هر څومره تکليفونه وزغمو.

د پورتنيو بيانونو څخه څرگندېږي چي زموږ اصل مرض دا دى چي په موږ کي ايماني جذبې له منځه تللي دي او اصلي مرض مو د ايمان کمزوري ده، کله چي اصلي شى له منځه ولاړ سي نو ورسره ټول صفتونه تړلي دي هغه هم له منځه ځي زموږ د ضعف او کمزورۍ اصلي لامل دا دى چي اصلي شى مو پرې ايښي دى هغه امر بالمعروف او نهى عن المنکر دى. بنکاره خبره ده چي هېڅ قوم تر هغه ترقي نه سي کولاى تر څو چي خلک يې په بنو خويونو او کمالاتو بنايسته نه سي زموږ يوازينى علاج دا دى چي موږ د تبليغ فريضه پوره کړو، ټينگ ودرېږو تر څو زموږ ايمان قوي سي او مړې جذبې مو بېرته را بيداره سي موږ الله ﷻ او رسول ﷺ وپېژنو او احکامو ته يې سر کښته کړو د دغه کار لپاره موږ ته هغه طريقه په کار ده کومه چي سيدالانبياء حضرت محمد ﷺ د مشرکينو د اصلاح لپاره کارول. ځکه الله ﷻ فرمايي:

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِي رَسُولِ اللَّهِ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ ﴿١٩﴾

(۱۸) سورة الحجر الايتان ( ۱۰ - ۱۱ ).

(۱۹) سورة الاحزاب الاية ( ۲۱ ).

ترجمه: بې شکه ستاسو لپاره په رسول الله ﷺ کي (د تابعداري) نښه نمونه ده. همدغه خبري ته امام مالک رحمه الله اشاره کړېده: لن يصلح آخر هذه الامة الا ما اصلح اولها! ترجمه: هيڅکله به د دې امت وروستي خلک اصلاح نه سي ترڅو چي هغه طريقه يې نه وي مختاره کړې کومه چي په لومړيو کي اصلاح سوې ده.

کوم وخت چي رسول الله ﷺ د حق دعوت لپاره ودرېدی هيڅوک يې ملگری نه وو او نه يې فکر کېدی يوازي و دنيایوي هيڅ طاقت نه و ورسره، په قوم کي يې ضد او سرکښي نهايي نقطې ته رسېدلې وه، په دوی کي هيڅوک د حق خبري اورېدلو ته تيار نه وو په ځانگړي ډول د کلمې طيبې څخه د رسول الله ﷺ قوم کرکه کوله او ځني بېزاره وه، په دغه وخت کي کوم طاقت و، چي يو مفلس، بې ياره او ناداره انسان خپل ټول قوم د حق و لوري ته راوبولي؟ اوس تاسو فکر وکړئ چي هغه کوم شی و، چي مخلوق يې د رسول الله ﷺ و لوري ته راوبولی او هغه شی چي چا تر لاسه کړی د تل لپاره د رسول الله ﷺ سو. ټولي دنيا ته معلومه ده چي د رسول الله ﷺ يو هدف و، پر هغه يې نظرو او هغه يې مقصد و، (چي په لاندې آيات کي ياد سوی دی):

|                                                                                                                                                                                      |                                                                                                                                         |
|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| <p>ژباړه: د الله ﷻ پرته به د بل چا عبادت نه کوو او نه به د الله ﷻ سره په هيڅ شي سره شریک نيسو او نه به موږ د ځينو لپاره څوک په خدايي سره نيسو د الله ﷻ پرته. (چي الله ﷻ پرېږدو).</p> | <p>أَلَّا نَعْبُدَ إِلَّا اللَّهَ وَلَا نُشْرِكَ بِهِ شَيْئًا وَلَا يَتَّخِذَ بَعْضُنَا بَعْضًا أَرْبَابًا مِّنْ دُونِ اللَّهِ (٢٠)</p> |
|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|

د يو الله د اطاعت او عبادت پرته يې خلک د نورو شيانو د عبادت څخه منعه کړه، د دښمنانو ټول بندونه او علاقې يې ماتې کړې او يو الهي قانون يې وټاکی او وې بنودل چي د دې قانون څخه مه ليري کېږئ بل لوري ته مخ مه اړوئ.

|                                                                                                                    |                                                                                                        |
|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| <p>ژباړه: د هغه شي تابعداري کوئ چي تاسو ته د الله ﷻ د لوري څخه راغلی دی د الله ﷻ پرته د بل چا تابعداري مه کوئ.</p> | <p>اتَّبِعُوا مَا أُنزِلَ إِلَيْكُم مِّن رَّبِّكُمْ وَلَا تَتَّبِعُوا مِن دُونِهِ أَوْلِيَاءَ (٢١)</p> |
|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------|

پورتنۍ خبره اصلي تعليم و او رسول الله ﷺ ته يې امر سوی و.

|                                                                                                                |                                                                                                                                    |
|----------------------------------------------------------------------------------------------------------------|------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| <p>ژباړه: اې محمده! د الله ﷻ و لاري ته خلک رابوله په حکمت او نېک نصيحت سره د خلکو سره په هغه طريقه بحث کوه</p> | <p>ادْعُ إِلَى سَبِيلِ رَبِّكَ بِالْحُكْمِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ وَجِدِلْهُمْ بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ</p> |
|----------------------------------------------------------------------------------------------------------------|------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|

(٢٠) سورة ال عمران الاية (٢٤).

(٢١) سورة اعراف الاية (٣).

چي بهتره وي بېشكه ستا رب په هغه كسانو پوه دى چي گمراه سوي دي او په هغو كسانو عالم دى چي پر هدايت دي.

أَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيلِهِ ۖ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ ﴿١٢٥﴾

دغه د هدايت هغه لويه لاره ده، چي د نبي ﷺ او د ده د هر تابعدار لپاره ټاكل سوېده.

ژباړه: ووايه! دا زما لاره ده زه رابولم په يقين سره زه او هغه څوك چي زما تابعدار دي الله ﷻ پاك دى او زه د مشركانو څخه نه يم.

قُلْ هَذِهِ سَبِيلِي أَدْعُو إِلَى اللَّهِ عَلَىٰ بَصِيرَةٍ أَنَا وَمَنِ اتَّبَعَنِي وَسُبْحَنَ اللَّهُ وَمَا أَنَا مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿٢٣﴾

ژباړه: تر هغه چا به نو د چا خبره ښه وي چي د الله ﷻ و لوري ته بلنه كوي او وايي زه د مسلمانانو څخه يم.

وَمَنْ أَحْسَنُ قَوْلًا مِّمَّنْ دَعَا إِلَى اللَّهِ وَعَمِلَ صَالِحًا وَقَالَ إِنِّي مِنَ الْمُسْلِمِينَ ﴿٢٤﴾

د الله ﷻ و لوري ته د هغه خلکو رابلل چي حقه لاره ځني ورکه وي، گمراهانو ته هدايت ښودل د نبي ﷺ د ژوند وظيفه ده او د ده مبارک اصلي مقصد و د ودي او ترقي لپاره يې په سلگونو او زرگونو انبياء او رسولان راغلي دي.

ژباړه: موږ ستا مخکي هېڅ رسول نه دى لېږلى مگر دا وحې مو ورته کړي دي چي زما پرته بل معبود نسته او زما عبادت کوى.

وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَسُولٍ إِلَّا نُوحِي إِلَيْهِ أَنَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنَا فَاعْبُدُونِ ﴿٢٥﴾

د رسول الله ﷺ او ټولو انبياوو په ژوند او د ژوند پر هره لحظه کي يې که سپړى نظر واچوي نو معلومېږي چي د دوى ټولو مقصد يو و، چي هغه د يوه الله ﷻ پر ذات او صفتونو باندي پوره يقين ساتل و. هم دا د اسلام مفهوم دى او انسان هم د دې لپاره پيدا سوي دى، ځکه الله ﷻ فرمايي:

وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْإِنْسَ إِلَّا لِيَعْبُدُونِ ﴿٢٦﴾

(٢٢) سورة النحل الاية (١٢٥).

(٢٣) سورة يوسف الاية (١٠٨).

(٢٤) سورة حم السجدة الاية (٣٣).

(٢٥) سورة الانبياء الاية (٢٥).

(٢٦) سورة الذاريات الاية (٥٦).

ترجمه: موږ پيرانان او انسانان يوازي د دې لپاره پيدا کړي دي چي عبادت وکړي اوس نو چي اصلي مقصد معلوم سو، ناروغي او علاج يې معلوم سو نو د علاج په طريقه اختيارولو کي زيات مشکلات نه پېښېږي او که په لاندي ډول طريقه که د علاج لپاره غوره سي انشاء الله گټوره به وي.

زموږ د ناپوهۍ مطابق د مسلمانانو د کاميابۍ او ترقي لپاره يو نظام غوره سوی دی، چي هغه ته په حقيقت کي اسلامي ژوند يا د پخوانيو مشرانو د ژوند نمونه ويل کېږي. چي لنډه نقشه يې ستاسو په خدمت کي وړاندي کوم: تر ټولو ضروري خبره داده چي هر مسلمان بايد د دنيا د ټولو مقصدونو څخه نظر واړوي او يوازي د کلمې طبيې د لوړوالي لپاره او د الهي احکامو د رواج د ترقي لپاره خپل مقصد جوړ کړي او د دې خبري لپاره ټينگه وعده وکړي چي د الله ﷻ هر امر به منم او د عمل کولو کوښښ به يې کوم او د الله ﷻ څخه به هيڅکله نافرمانی نه کوم او د پورتنی مقصد لپاره په لاندي قاعدو سره عمل کوم:

۱ - کلمه: د لا اله الا الله محمد رسول الله په صحيحو الفاظو ويل، په معنی او مطلب يې ځان پوهول، په ذهن کي يې د کښنولو کوښښ کول او خپل ټوله ژوند د دې کلمې سره برابر جوړول.

۲ - د لمانځه پابندي کول، د شرائطو او ادابو لحاظ يې کول، په خشوع او خضوع سره يې اداء کول او په هر رکن کي يې د الله ﷻ د لوی والي او عظمت فکر کول او د خپلي بپوسۍ او بندگۍ فکر کول، لنډه دا چي لمونځ دي په داسي ډول وکړي چي د الله ﷻ په دربار کي د وړاندي کېدو وړ وي او د دغسي لمانځه د توفيق غوښتنه دي وکړي. که يې نه وي زده زده دې کړي او په لمانځه کي د ټولو شيانو ويل دي ياد کړي.

۳ - د قرآن کریم سره اړيکي او مينه کول او محبت ورسره پيدا کول چي په دوو طريقو سره کيدای سي:

الف: د ورځي په ټاکلي وخت کي د قرآن کریم تلاوت په داسي ډول کول، چي په معنی کي يې فکر کوي که يې په معنی نه پوهېږي نو دغسي دي يې تلاوت کړي او دا فکر دي کوي چي زما کاميابي او گټه په قرآن کریم کي پرته ده. يوازي الفاظ ويل هم لويه ښکمرغي ده د خير او برکت لوی سبب دی. که قرآن کریم نه سي لوستلای نو لږ وخت دي د قرآن په زده کړه کي مصرفوي.

ب: د خپلو اولادو، د کلي د هلکانو او نجنو د قرآني د تعليم فکر کول او تر ټولو کارو يې وړاندي فکر کول.

۴ - څه وخت د الله ﷻ په یاد او ذکر کې تېرول او د طریقې لپاره یې د طریقت یو پیر پیدا کول البته چې د سنتو تابعدار وي او دهغه څخه پوښتنه کول که نه نو دریمه کلمه لوستل:

سبحن الله والحمد لله ولا اله الا الله والله اكبر ولا حول ولا قوة الا بالله العلي العظيم!

پورتنۍ کلمه او درود شریف سهار او ماښام سل ځله لوستل په داسې ډول چې د زړه په پوره ارامتیا سره وي ځکه په حدیثو کې یې زیات فضیلتونه راغلي دي.

۵ - هر مسلمان خپل ورور گڼل او همکاري او غمخواري ورسره کول. د اسلامي ځانگړتیاوو په موخه د هغه احترام او درنښت کول، د داسې خبرو څخه ځان ژغورل چې د مسلمان ورور د تکلیف او درد سبب گرځي. د پورتنیو خبرو دي خپله هم پابندي کوي او د نورو مسلمانانو د هڅولو کوښښ دي هم کوي دا نو داسې کېږي چې په ورځنی ژوند کې څه وخت د اسلام د خدمت او خپرولو لپاره بېل کړي، او هم د دې لپاره پوره تیاري وکړي. د کوم دین د خپرولو لپاره چې رسول الله ﷺ، انبیاوو ډول - ډول تکلیفونه برداشت کړل، اصحابو کرامو او زموږ مشرانو خپل عمرونه پکښې ولگول او د دغه دین لپاره یې خپل ځانونه قربان کړل نو د دغه دین د خپرولو او پاته ساتلو لپاره لږ وخت هم نه لگول لویه بدبختي ده دا هم هغه ضروري فریضه ده چې د پرېښودو له امله یې موږ نن برباد او تباه سوي یو.

لومړی د مسلمان کېدو څخه مطلب دا گڼل کېدی چې د خپل ځان او مال د عزت، اسلام خپرول او د کلمې د لوړوالي لپاره وخت ولگوي که به چا داسې نه کول ناپوه گڼل کېده خو افسوس چې نن موږ ته مسلمانان ویل کېږي خو د دین پر خپرولو خپلي سترگې پټې ساتو بیا هم د دین د خپرولو لپاره هیڅ کوښښ نه کوو. لنډه دا چې د ژوند څخه مقصد د کلمې لوړوالی او د دین خپرول بلل کېږي. دا هم هغه کار دی چې زموږ د دنیا او آخرت کامیابي ورسره تړلې ده دا هم هغه کار دی چې له امله یې نن موږ خوار او ذلیل یو. اوس بیا موږ ته د خپل اصلي مقصد راپورته کول په کار دي او د ژوند اصلي مشغله جوړول په کار دي چې بیا رحمت الهي پر جوش راسي او زموږ د دنیا او آخرت کامیابي بیرته رانسیب سي. د دغه کار د کولو څخه هیڅ کله دا مقصد نه دی چې نور کارونه پرېږدئ یوازې دغه کار پر مخ بیایاست بلکې مقصد دا دی چې لکه څرنگه چې د دنیا کارونه پر مخ بیایې دغه کار هم ضروري وې بوله او وخت ورته بېل کړه او د دنیا کارو ته هم وخت بېل کړه یا په بل عبارت چې څو کسان د دې کار لپاره تیار سي په هفته کې څو ساعتونه پخپله محله (کلي) کې په میاشت کې درې ورځې نژدې همسایگانو ته او په کال کې څلوېښت ورځې په ليري ځایونو کې دا کار وکړئ او

کونښن وکړي چې هر شتمن، ناداره، زمينداره، ملازم، عالم او بې علمه په دې کار کې شريک کړي او د دغه کار پابنده يې جوړ کړي.

## د کار کولو طريقه

لږ تر لږه دې لس کسان د تبليغ کولو لپاره ووزي، لومړی دې يو آمر وټاکي بيا دې سره يو ځای سي د اوداسه وروسته دې دوه رکعتہ نفل وکړي (په دې شرط چې مکروه وخت نه وي) بيا دې والله ﷻ ته زاری وکړي د کاميابۍ او الهي توفيق غوښتنه دي وکړي د خپلي ثابت قدمۍ دعا دي وکړي بيا به په کراره - کراره د الله ﷻ د ذکر په کولو سره روان سي بې ځايه خبرې دي نه کوي کله چې وټاکلي ځای ته ورسېږي ټوله دي سره راجمع سي دعا دي وکړي بيا به په ټول کلي گڼت وکړي لومړی به لمونځ په وکړي بيا به د دغه کار د کولو لپاره وعده ځني واخلي او دغه کار ته دي يې تيار کړي، بيا به دغه خلک د ځان سره بوزي گڼت دي وکړي په ښځو دي هم لمونځ وکړي د پابندۍ وعده دي ځني واخلي. کوم خلک چې دې کار ته تيار سو نو د هغوی څخه دي هم يو جماعت جوړ کړي او يو امير دي ورته مقرر کړي پخپله نگراني کې دي يې واخلي او د هغوی د کار کولو فکر دي کوي. هر تبليغ کوونکی ته په کار ده چې د خپل امير خبره به مني او هر امير ته په کار ده چې د خپلو ملگرو په خدمت کولو، استراحت کولو، همت زياتولو او مرسته کولو کې دي کمی نه کوي او د کومې خبرې چې مشورې ته اړتيا لري د ټولو ملگرو څخه دي مشوره اخلي او عمل دي په کوي.

## د تبليغ ادا

دغه کار د الله ﷻ يو لوی عبادت دی او لويه ښکمرغي ده د انبياوو پر لاره تگ دی، کار چې څومره لوی وي په هغه اندازه ادا غواړي. د دې کار څخه مقصد د نورو هدايت نه دی بلکې د خپل ځان اصلاح او د بندگۍ څرنگوالی دی او د الله ﷻ د حکمونو پر ځای کول دي. د الله ﷻ رضا لټول دي، نو په کار ده چې لاندې ټکي په ښه ډول په ذهن کې کښنوي او پابندي يې وکړي.

۱ - خپل ټول خرڅ يعني خوړل، څښل او کرایه دي پر خپله غاړه واخلي که مو توان و د بل ناداره ملگري مصرف هم پر غاړه واخلي.

۲ - د خپل ملگري او د دې پاک کار کوونکو خدمت خپل ویاړ وگڼئ، د ملگرو درنښت او احترام وکړئ.

۳ - د عامو مسلمانانو سره په عاجزی او کمینۍ سره معامله کوئ، نرمه لهجه او د خوشحالی کره وړه ورسره اختیار کړئ، هیڅ مسلمان ته د سپکاوي او نفرت په سترگه مه گورئ، په ځانگړي ډول د علماوو زیات عزت کوئ. لکه څرنګه چي پر موږ باندي د قرآن او حدیث عزت او عزمت واجب او ضروري دی، همدا ډول د علماوو عزت او درنښت هم پر موږ باندي ضروري او واجب دی، ځکه الله ﷻ دوی په لوی نعمت سره سرلوړي کړي دي. د علماوو سپکوالی د دین د سپکوالی سره برابر دی او د دین سپکوالی د الله ﷻ د قهر او غضب سبب گرځي.

۴ - فارغه وخت د غیبت، بهتان، درواغو او د لوبو د تماشو پر ځای د دین د کتابو په مطالعه او د نېکو خلکو سره په ناسته تېر کړئ په دغه کار سره به د الله ﷻ او د هغه د رسول ﷺ خبري درته معلومي سي په ځانگړي ډول د تبلیغ په ورځو کي د بې ځایه خبرو څخه بېخي پرېهېز وکړئ. خپل فارغه وخت د الله ﷻ په یاد، ذکر، فکر، استغفار او درود په ویلو او زده کولو کي تیروئ.

۵ - په حلاله طریقه سره رزق حاصلوئ، کم خرڅ کوئ او د خپلو بچیانو او د نورو شرعي حقوق ادا کوئ.

۶ - په اختلافي مسئله او فروعی مسائلو کي څېړنه مه کوئ بلکي یوازي د توحید لوري ته دعوت کوئ او د اسلام د ارکانو تبلیغ کوئ.

۷ - خپل ټول کارونه او ویناوي په اخلاص او صفوف سره بنایسته کړئ په اخلاص سره لږ عمل د ډېري فائدي او برکت سبب جوړېږي د اخلاص پرته په کار کي نه د دنیا گټه سته او نه په آخرت کي کوم ثواب ورته سته. حضرت معاذ ؓ چي کله رسول الله ﷺ د یمن حاکم وټاکي د لېږلو په وخت کي یې د رسول الله ﷺ څخه غوښتنه وکړه، چي ما ته نصیحت وکړه. رسول ﷺ په جواب کي ورته وویل، چي:

په کارو کي اخلاص او اهتمام کوه، د اخلاص سره مل لږ کار هم کفایت کوي. په بل حدیث کي راغلي دي چي الله ﷻ یوازي هغه عملونه قبلوي چي د الله ﷻ لپاره یوازي سوي وي. په بل ځای کي راځي چي الله ﷻ ستاسو شکلو ته نه گوري بلکي ستاسو زړونو او عملونو ته گوري. نو تر ټولو مهمه خبره دا ده چي په کار کي باید اخلاص وي د ځان نبودني او ریا ته هیڅ ځای نه وي پکښې، څومره چي په کار کي اخلاص وي په هغه اندازه به

په کار کې ترقي او تازگي وي. د کار کولو تگلاره په لنډ ډول ستاسو و حضور ته وړاندې سوه، پر اړتيا يې هم کافي رڼا واچول سوه خو خبره دا ده چې دغه تگ لاره به زموږ د دې پرېشاني او بې ارامۍ په حال کې خومره رهبري وکړي او تر کومه حايه پوري به زموږ مشکلات را حل کړي د دغې خبرې لپاره و قرآن کریم ته بيا رجوع کوو، قرآن کریم زموږ دغه کونښن يو گټور تجارت بللی دی او داسې پکښې فرمايل سوي دي:

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ ءٰمَنُوْا هَلْ اَدْلٰكُمْ عَلٰۤى  
تِجْرَةٍ تُنْجِيْكُمْ مِّنْ عَذَابِ اَلِيْمٍ ۝۱۰ تُوْمِنُوْنَ  
بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهِۦ وَتُجْهَدُوْنَ فِى سَبِيْلِ اللّٰهِ  
بِاَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ  
تَعْمَلُوْنَ ۝۱۱ يَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَيُدْخِلْكُمْ  
جَنَّاتٍ تَجْرٰى مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ وَمَسٰكِنَ طَيِّبَةً  
فِى جَنَّاتٍ عَدْنٍ ۚ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝۱۲  
وَاٰخَرٰى حُجُوْبَهَا نَصْرٌ مِّنَ اللّٰهِ وَفَتْحٌ قَرِيْبٌ  
وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝۱۳ (۲۷)

ژباړه: اي ايمان والو! ايا زه تاسو ته داسې تجارت وښيم چې تاسو د دردوونکي عذاب څخه ژغوري؟ تاسو پر الله ﷻ او پر رسول ﷺ باندي ايمان راوړئ د الله ﷻ په لاره کې په مال او ځان سره جهاد وکړئ دا ستاسو لپاره ډيره بهتره ده که تاسو پوهېږئ، الله ﷻ به ستاسو گناهونه معاف کړي او تاسو به داسې جنتونو ته داخل کړي چې د درختو تر ښاخو لاندي به يې ولې بهېږي. ښه حايونه چې د اوسېدو په باغو کې به وي دا لويه کاميابي ده يوه بله خبره هم سته چې تاسو يې خوښوئ د الله ﷻ د لوري څخه مرسته او ژر برياليتوب دی زېري تاسو مؤمنانو ته درکړل سوي دي.

په پورتنۍ آيات کې د تجارت بيان سوي دی، چې لومړۍ گټه يې دا ده چې د دردوونکي عذاب څخه خلاصون دی، دغه تجارت دا دی چې موږ به پر الله ﷻ او رسول ﷺ باندي ايمان راوړو او د الله ﷻ په لار کې به په مال او ځان سره جهاد کوو دا هغه کار دی چې زموږ لپاره سراسر گټه ده که په موږ کې لږ پوهه او عقل موجود وي په دغه اسانه کار به موږ ته دومره لويې گټې راکړل سي چې ټول گناهونه به مو معاف سي او په آخرت کې به په لويو نعمتونو سره سرلوړي سو، همدغه لويه کاميابي ده خو په دغه کاميابۍ باندي بس والی نه دی راغلی بله دا ده چې په دنيا کې هم موږ ته خوشالي پر دښمنانو برياليتوب او حکومت راکړل کېږي. الله ﷻ موږ ته د دوو شيانو امر وکړ، لومړی دا چې موږ به پر الله ﷻ او رسول ﷺ باندي ايمان راوړو، دوهم دا چې د الله ﷻ په لاره کې به په مال او ځان سره

جهاد کوو. د دغو دوو شيانو په بدله کي الله ﷻ موږ ته د دوو شيانو وعده راکړه يوه په آخرت کي تل جنت، ارام او استراحت. دوهم په دنيا کي برياليتوب او کاميابي. لومړی کار چي زموږ څخه غوښتل سوی دی ايمان دی ښکاره خبره ده چي د دغي غوښتنې څخه مطلب دا دی چي موږ ته د حقيقي ايمان دولت رانصيب سي. دوهمه غوښتنه زموږ څخه دا ده چي جهاد وکړو که څه هم جهاد دا دی چي موږ د کافرانو سره وجنگېږو خو اصلي مطلب يې د کلمې طبيعي لوړوالی او د اسلامي احکامو جاري کېدل دي، همدغه لوی مقصد د جهاد دی او زموږ د تحریک همدغه مقصد دی. اوس معلومه سوه، چي لکه څرنگه چي د آخرت د ژوند ښه والی او د عذاب څخه خلاصون پر الله ﷻ او رسول ﷺ باندي په ايمان راوړلو او د الله ﷻ په لاره کي په کونښ کولو پوري تړلی دی همدا ډول د دنيا د ژوند ښه والی هم په دغه دوو شيانو پوري وتړل سو. کله چي موږ پر الله ﷻ او رسول ﷺ باندي ايمان راوړو او د الله ﷻ په لاره کي کونښ وکړو ترڅو اسلامي احکام جاري کړو نو ښکاره خبره ده، چي د محکمي پاچهي به زموږ وي او د حکومت او خلافت وړ به موږ يو او زموږ به وي حکم الله ﷻ فرمايي:

|                                                                                                                                                                                                                                                                                                                      |                                                                                                                                                                                                                                                                                                                         |
|----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| <p>ژباړه : په تاسو کي چي کومو خلکو ايمان راوړی وي، ښک عملونه کوي الله ﷻ وعده ورکوي چي د محکمي خلافت به ورکوي لکه څرنگه چي محکمي ستاسو يې و خلکو ته ورکړی و. کوم دين چي يې د دوی لپاره خوښ کړی دی هغه دوی ته قوت ورکوي وروسته به د دوی وېره په امن کړو، په دې شرط چي زما عبادت وکړي او زما سره هېڅ شريک ونه نيسي.</p> | <p>وَعَدَ اللَّهُ الَّذِينَ ءَامَنُوا مِنكُمْ وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِي الْأَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِينَهُمُ الَّذِي ارْتَضَىٰ لَهُمْ وَلَيُبَدِّلَنَّهُم مِّن بَعْدِ خَوْفِهِمْ أَمْنًا يَعْبُدُونَنِي لَا يُشْرِكُونَ بِي شَيْئًا (٢٨)</p> |
|----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|

په پورتنی آیات کي د ټول امت سره د حکومت او خلافت وعده سوې ده دغه وعده ټولو ولیدل د نبي ﷺ د زمانې څخه د خلفاء راشدینو تر زمانې پوري دغه وعده ښکاره سوه لکه چي جزيرة العرب د رسول ﷺ په زمانه کي او نور ملکونه د خلفاء راشدینو په زمانه کي فتح سول. بیا وروسته که څه هم یووالی نه و، څه وخت پر وخت د ښکوپاچېانو سره دغه وعده پوره کېدل ښکاره سوه، حکم الله ﷻ فرمايي:

ان حزب الله هم الغالبون . ونحوه (۲۹)

اوس نو معلومه سوه چي په دنيا کي ارام، سکون، عزت او آبرو کي د ژوند تېرولو لپاره يوازي لاره دا ده چي موږ په کامل دين کي داخل سو، عمل په وکړو او تر نورو پوري يې د رسولو لپاره په ټينگه ملا وتړو، بلکي خپل ټول ژوند د دغه کار لپاره وقف کړو. الله ﷻ فرمايي:

وَأَعْتَصِمُوا بِحَبْلِ اللَّهِ جَمِيعًا وَلَا تَفَرَّقُوا ۚ ﴿٢٠﴾ | ژباړه : تاسو ټوله دين ټينگ ونيسي او ټوټې ټوټې مه جوړېږئ

دا په لنډ ډول د عمل لپاره يو نظام دی چي په حقيقت کي د اسلامي ژوند او مشرانو د ژوند يوه نمونه ده. دملک ميوات په سيمه کي د يو وخته څخه دغه کاروان دی او د دې نيمگړي کونښن تنبجه دا ده چي ورځ په ورځ خلک اخته دي په کار کي ترقي کوي. د دغه کار گټي او فايدي خلکو وليدي تر کومه ځايه چي د ليدلو سره اړه لري. که ټول مسلمانان په اتفاق سره دا کار شروع کړي نو د الله ﷻ څخه هيله لرم چي د دوی ټول مصيبتونه او مشکلات به ليري سي په دنيا کي به په ښه ارامۍ، اطمینان او عزت سره ژوند وکړي او د لاسه ورکړي شان او شوکت به بيرته لاسته راوړي. ځکه الله ﷻ فرمايي:

وَلِلَّهِ الْعِزَّةُ وَلِرَسُولِهِ وَلِلْمُؤْمِنِينَ ۚ ﴿٣١﴾

هر څومره چي ما د خپل مقصد د پوهولو لپاره کونښن وکړ، خو دا د يو څو تجويزونو مجموعه نه ده. بلکي دا يو عملي مسوده (خاکه ده) چي د الله ﷻ يو خوښ بنده سيدي و مولائي مخدومي و مخدوم العالم مولانا محمد الياس رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ واخيسته او د دې پاک کار لپاره يې خپل ټول ژوند وقف کړ. په همدې وجه تاسو په دې بې ربطه کړنو لوستلو او پوهېدلو بس والی هيڅکله مه کوئ، بلکي دا کار زده کړئ او د دې کار عملي نمونه وگورئ د هغه څخه سبق واخلي او په دغه قانچه کي دي د ځان اچولو کوشش وکړئ هم دې لوري ته متوجه کول زما مقصود دی. نور بس:

ميري قسمت سی الی پائین یرنگ قبول ﴿﴾ پهل کچه من نی چونی من ان کی دامن کیدی

ژباړه: الهي! زما قسمت ته د قبولیت رنگ ورکړې د لمني لپاره مي يو څه گلان ټول کړل.

(۲۹) بیان القرآن.

(۳۰) سورة ال عمران الاية (۱۰۳).

(۳۱) سورة المنافقون الاية (۸).

و آخر دعوانا ان الحمد لله رب العالمين والصلوة والسلام علي رسوله محمد وآله واصحابه اجمعين  
برحمتك يا ارحم الراحمين .

مرتب: مولانا محمد احتشام الحسن ۱۸ ربیع الثاني ۱۳۵۸ = ۷ جولای ۱۹۳۹ م، چهارشنبه  
ژباړونکی: مولوي عبدالهادي حماد مقيم جامعه اسلاميه اشرفيه  
۱۳۸۶/۱۰/۲۱ = ۱۱ جنوري د ۲۰۰۷ م، جمعه مبارکه

**Thank you for reading**

Find more e-books and articles on Ketabton - your multilingual digital library.

**[www.ketabton.com](http://www.ketabton.com)**

*Ketabton - Pashto, Farsi, Arabic & English*